मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

Platinum Edition

(अंक-75, जुलाई-दिसम्बर, 2018)

संरक्षक

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी

कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. निवेदिता मैत्रा

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

सच्चिदानंद ब्रह्म और आनंद-विद्या

सविता गुप्ता

तत्त्व अन्वेषण की प्रत्यक्-विश्लेषण-प्रवण प्रणाली से मनुष्य को आत्म तत्त्व के रूप में अन्तःस्थित सत्य प्राप्त हुआ तो पराक् बाह्य जगत् के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण से परम तत्त्व मिला ब्रह्म। ब्रह्म के स्वरूप विवेचन को लेकर विभिन्न विचारकों के मतानुसार अनेक धारणाएँ विकसित हुई। जिन्होनें अपनी पूर्ववर्ती विषयक चरम तत्त्व की धारणा की अपेक्षा अधिक स्पष्ट व्याख्या की। अन्ततः निर्गुण ब्रह्म की धारणा विकसित हुई और सुदृढ़ बनी। इसी निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप का विवेचन सच्चिदानंद रूप से किया गया जिसमें सत्, चित् और आनंद अखण्डैक रस है। ब्रह्म[1] शब्द 'वृह' धातु से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है वृद्धि। 'वृह' धातु से व्युत्पत्ति सिद्ध ब्रह्म नित्यत्व, शुद्धत्व, प्रकाशत्व, रसत्व, निरतिशयत्व आदि अर्थ का भी द्योतक है। ब्रह्मनंद सरस्वती[2] शुद्ध की व्याख्या करते हैं कि ब्रह्म राग-द्वेषादि अशुद्धि से रहित है। ब्रह्म के शुद्ध होने का तात्पर्य उसके निर्धर्मक होने से भी है। ब्रह्म निराकार, निर्विकार, निर्विशेष, निर्गुण, अविनाशी, सत्, चैतन्य व आनंद स्वरूप है। उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म के स्वरूप के विश्लेषणाधार पर मुख्यतः पाँच पक्ष दृष्टिगोचर होते है - एकत्व या अद्वयत्व, सत्व, चित्व, आनंदत्व और निर्गुणत्व। उपनिषदों में ब्रह्म का निरूपण विधि और निषेध दोनों ही रूपों से किया है। विधि रूप में ब्रह्म सब कुछ और समग्र संसार के कारण का मूल स्त्रोत होने के साथ सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सृष्टिकर्त्ता, सर्वान्तर्यामी आदि गुणों से युक्त है। वहीं निषेध रूप में 'नेति-नेति' (वह यह नहीं है) कह कर उसका प्रतिपादन किया है। निषेध वाक्य निर्गुण ब्रह्म और विधि वाक्य सगुण ब्रह्म के प्रतिपादक है जो ब्रह्म के पर और अपर रूप को बताते है। इसके साथ ही ब्रह्म का संकेत देने के लिए उसके स्वरूप और तटस्थ लक्षणों का उल्लेख भी उपनिषदों में मिलता है। स्वरूप लक्षण वह हैं जो तत्त्व की वास्तविक प्रकृति का संकेत देते हैं और तटस्थ लक्षण तत्त्व की प्रकृति नहीं बताते बल्कि उसकी ओर अभिमुख करने का संकेत करते है। स्वरूप लक्षण के अन्तर्गत ब्रह्म का सच्चिदानंद होना आता है एवं जगत को लेकर ब्रह्म में जितने भी विश्लेषण (सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता, संहारकर्त्ता, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान इत्यादि) लगाये जाते हैं वह ब्रह्म के तटस्थ लक्षण कहलाते हैं।

I

ब्रह्म का स्वरूप है "सत्यं ज्ञानमनन्तम् ब्रह्म"[3] सत्य, ज्ञान और अनन्त। अनन्तता में आनंद भी है। दोनों में कोई भेद नहीं है इसलिए कहीं-कहीं ब्रह्म को सच्चिदानंद भी कहा है। ब्रह्म के स्वरूप लक्षण से किन्हीं विशेष गुणों या धर्मों का प्रतिपादन नहीं वरन् विरोधी धर्मों का निवारण किया जाता है। सत् पद असत्, चित्

मध्य भारती-75, जुलाई-दिसम्बर, 2018, ISSN 0974-0066, *pp. 146-150*